



ग्रीनहाउस गैसों से बिगड़ रहा जलवायु संतुलन

संध्या रायचौधरी

आज की तारीख में शायद ही कोई ऐसा इंसान इस धरती पर हो जो बिगड़ते पर्यावरण से परिचित न हो और कभी न कभी अपनी चिंताओं में उसे दर्ज न करता हो। लेकिन दूसरी तरफ इससे भी बड़ा सच यह है कि लगातार बिगड़ते पर्यावरण के प्रति मौजूदा जागरूकता का कोई लाभ होता नहीं दिख रहा।

1990 के दशक में जब रियो डी जेनरो में पृथ्वी सम्मेलन हुआ था और दुनिया के लगभग सभी बड़े राष्ट्रध्यक्षों व शासनाध्यक्षों ने एक जगह मौजूद होकर आह्वान किया था कि धरती को बचाने के लिए सीएफसी गैसों की वातावरण में मौजूदगी को ज्ञान और व्यवहार के ज़रिए कम किया जाएगा, तब किसी ने नहीं सोचा था कि इस आह्वान को व्यवहार में कतई तबजो नहीं दी जाएगी। अगर 1990 के दशक में धरती के बिगड़ते वातावरण के प्रति चिंतित दुनिया सचमुच कुछ करती तो आज ये दिन नहीं देखने पड़ते।

संयुक्त राष्ट्र की एक ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा पिछले 30 सालों में सबसे ज़्यादा बढ़ी है। साल 2013 में यानी इस रिपोर्ट के तैयार होने के समय वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मौजूदगी 387 पीपीएम तक पहुंच गई थी। जिसका तकनीकी रूप से मतलब यह है कि सन 1750 यानी आधुनिक औद्योगिक युग शुरू होने के समय से अब तक 104 पीपीएम की वृद्धि हो चुकी है।

अन्य गैसों भी हैं

संयुक्त राष्ट्र के ग्रीनहाउस बुलेटिन के मुताबिक ग्लोबल वॉर्मिंग में बड़ी भूमिका निभाने वाली कार्बन डाईऑक्साइड के वैश्विक सांद्रण में साल 2012 और 2013 के बीच बहुत ज़्यादा वृद्धि हुई है। यह पिछले 30 सालों की सर्वाधिक सालाना वृद्धि है। शायद दुनिया को यह बात इसलिए याद

दिलाई जा रही है, क्योंकि अगले साल पेरिस में ग्रीनहाउस गैसों पर एक वैश्विक समझौता बैठक होने वाली है। उसी बैठक की भूमिका के बतौर इस चिंता को दुनिया के साथ साझा किया गया है। हैरानी की बात यह है कि जहां इन दिनों पूरी दुनिया में धरती के बिगड़ते पर्यावरण संतुलन पर चिंता जताई जा रही है, वहीं व्यावहारिक स्तर पर इन्हीं दिनों सबसे ज्यादा पर्यावरण को नुकसान भी पहुंचाया जा रहा है। इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि साल 2013 में वातावरण में सिर्फ कार्बन डाईऑक्साइड की ही मात्रा नहीं बढ़ी बल्कि मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड आदि की भी मात्रा ज़बरदस्त रूप से बढ़ी है। इन सभी गैसों के मिश्रण ने अपनी बढ़त का सबसे बड़ा रिकॉर्ड बनाया है।

हर पल ग्लोबल वार्मिंग

एक तरफ जहां ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नए रिकॉर्ड बना रहा है, वहीं दूसरी तरफ इस तरह के उत्सर्जन को सोखने वाले महासागर पहले की तुलना में कहीं अधिक अम्लीय हो गए हैं। विश्व मौसम संगठन डब्ल्यूएमओ प्रमुख मिशेल जारौद के मुताबिक, हम जानते हैं कि जीवाश्म ईंधन जलाने जैसी मानवीय गतिविधियों के चलते हमारी जलवायु बदल रही है और मौसम बेहद विषम हो रहा है। इसलिए हमें जितना जल्दी हो सके कार्बन डाईऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती करनी ही होगी। हम निरंतर समय से पिछड़ रहे हैं। हालांकि यह बात सच है कि कार्बन डाईऑक्साइड वातावरण में जिस रफ्तार से बढ़ रही है या अभी तक बढ़ी है उसके हिसाब से विश्व के तापमान में वृद्धि नहीं हुई है। इसके बावजूद भी ग्लोबल वार्मिंग का खतरा हर गुज़रते पल के साथ बढ़ता जा रहा है और यह खतरा धरती के समूचे विनाश का खतरा है।

ग्रीनहाउस गैसों ही वास्तव में जलवायु परिवर्तन और दुनिया में बढ़ते तापमान के लिए उत्तरदायी हैं। धरती को सबसे ज्यादा गर्म बनाने वाली गैसें यही हैं। कार्बन डाईऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, ओज़ोन, ये धरती की सेहत की चिंता के बेहद संवेदनशील शब्द हैं। पिछले 10-15 सालों में कार्बन

डाईऑक्साइड का उत्सर्जन 40 गुना तक बढ़ा है। यह हैरान और हताश करने वाला सच है क्योंकि इससे मतलब यही निकल रहा है कि हम कुछ भी सीखने को तैयार नहीं हैं। औद्योगिकरण के बाद से अब तक इसमें 100 गुना से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है क्योंकि हमारी जीवन शैली जिन उपकरणों पर निर्भर हो गई है (फ्रिज, कम्प्यूटर, स्कूटर, कार) वे सब इन गैसों की बढ़ोतरी का सबब हैं।

निपटना नहीं जानते

लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि पुराने ढंग की जीवन शैली इनकी सेहत के लिए या कहेँ धरती को स्वस्थ बनाए रखने के लिए बहुत अच्छी चीज़ हो। सच तो यह है कि पारंपरिक जीवन शैली में भी पशुपालन और लकड़ी से चूल्हे में खाना बनाना धरती के विनाश को दावत देना है। कोयला तथा बिजली घर भी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं। इसलिए यह बेहद संवेदनशील पहलू है कि हम ग्रीनहाउस गैसों के बारे में सोचते हुए अपनी पुरानी और नई जीवन शैली के बीच का कोई ऐसा रास्ता निकालें, जो हमें भी बचाए और धरती को भी।

दरअसल ग्लोबल वॉर्मिंग के हालात इसलिए भी चिंताजनक है क्योंकि यह एक ऐसी समस्या है जिसे हम पिछले कई दशकों से बहुत अच्छी तरह से जान रहे हैं और बहुत अच्छी तरह से यह भी समझ रहे हैं कि इस समस्या से निपटा जाना चाहिए। मगर यह नहीं जानते कि कैसे। यही वजह है कि हम न तो इस समस्या से सही मायनों में निपट पा रहे हैं और न ही इसका कोई विकल्प ढूंढ रहे हैं। दिन-रात खौफनाक कल की चर्चा तो हो रही है लेकिन चर्चा करने वाले हर व्यक्ति को पता ही नहीं कि वह धरती की सेहत को बेहतर बनाने के लिए किन लोगों को सीख देना चाहता है? क्योंकि लगता है कि उसके अलावा और किसी को इसकी समझ नहीं है। दरअसल कई बार किसी सूचना की अति भी हमें संवेदनहीन बनाती है। इस मामले में ऐसा ही हो रहा है। हम जितना ज्यादा इसके बारे में जान गए हैं उससे कहीं ज्यादा इस जानी हुई चिंता के सम्बंध में बेफ़िक्र हो गए हैं। यह सबसे खतरनाक होता है। वक्त आ गया है

कि इससे मुक्त होने के लिए हर हाल में पहला कदम उठाएं और संकल्प लें कि 2020 से लागू होने वाली ग्रीनहाउस गैसों से सम्बंधित संधि पर अगले साल हस्ताक्षर हो जाएं और हर देश उस समझौते पर ईमानदारी से अमल करें।

उत्सर्जन में कमी ज़रूरी

पिछले दिनों जलवायु परिवर्तन पर गठित अंतर-सरकारी पैनल (आइपीसीसी) ने एक रिपोर्ट में कहा था कि अगर वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन मौजूदा दर से जारी रहा तो अगले दो-तीन दशकों में दुनिया का तापमान दो डिग्री सेल्सियस से ज़्यादा तक बढ़ जाएगा। यह स्थिति प्रलय से कम खतरनाक नहीं होगी। ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए ज़रूरी है कि कार्बन उत्सर्जन में आशातीत कमी हो। धरती का तापमान नियंत्रित हो इसके लिए ज़रूरी है कि वातावरण में कार्बन की मात्रा में 250 अरब टन या 2.5 लाख मेगाटन से ज़्यादा की वृद्धि न हो। 2.5 लाख मेगाटन कार्बन करीब नौ लाख मेगाटन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर होता है। वैज्ञानिकों ने अलग-अलग ढंग से गणना करके यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि वातावरण में कार्बन की मात्रा को 7.5 लाख मेगाटन तक सीमित रखा जाए, तो इस बात की 75 फीसदी संभावना है कि ग्लोबल वार्मिंग को दो डिग्री सेल्सियस के दायरे में समेटा जा सकेगा।

इस 7.5 लाख मेगाटन कार्बन में से पांच लाख मेगाटन कार्बन मानवीय गतिविधियों, मुख्यतः जैव ईंधन को जलाने और जंगलों को काटने के कारण, पहले ही वायुमंडल में प्रवेश कर चुका है। यानी गुंजाइश सिर्फ 2.5 लाख मेगाटन अतिरिक्त कार्बन उत्सर्जन की रह जाती है। इसके लिए ज़रूरी है कि वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी की जाए, जंगलों की कटाई कम की जाए और ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों को बढ़ावा दिया जाए। लेकिन पर्यावरण संरक्षण के नाम पर अब तक हम कुछ सकारात्मक नहीं कर पाए हैं।

पिछले दो दशकों से वैश्विक स्तर पर कई महत्वपूर्ण सम्मेलन हुए, कई ड्राफ्ट बने, घोषणाएं हुईं, लेकिन वास्तविक धरातल पर कुछ खास नहीं हुआ। पर्यावरण और कार्बन उत्सर्जन में कटौती के मुद्दे पर विकसित और विकासशील देशों के बीच आज तक कोई आम सहमति नहीं बन पाई।

30 से ज़्यादा ग्रीनहाउस गैसों

वातावरण में 30 से ज़्यादा ऐसी गैसों मौजूद हैं, जिन्हें ग्रीनहाउस गैसों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इनमें कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन को सबसे नुकसानदेह माना जाता है। वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को बढ़ाने में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान है। इंसान सांस के माध्यम से जो दूषित हवा बाहर छोड़ता है, उसमें कार्बन डाइऑक्साइड होती है। चूल्हा जलाने से निकलने वाला धुआं भी कार्बन डाइऑक्साइड है। हालांकि पेड़-पौधे सूरज की रोशनी में इस गैस को सोख लेते हैं। इसी वजह से हज़ारों वर्षों से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ने की समस्या पैदा नहीं हुई है। मौजूदा युग में जिस तरह से उद्योग-धंधों का विकास हुआ है, उससे यह समस्या और बढ़ गई है। साथ ही, मोटरगाड़ियों आदि से भी बड़ी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों निकलती हैं। खेती और पशुपालन सम्बंधी गतिविधियों से मीथेन गैस पैदा होती है। यह गैस ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करने में भूमिका तो ज़रूर निभाती है, लेकिन इसे कम खतरनाक माना जाता है, क्योंकि मीथेन अल्पजीवी है। इसका जीवन काल महज सात वर्षों का होता है। इसके बाद धीरे-धीरे यह गैस कार्बन डाइऑक्साइड और पानी में विघटित हो जाती है। इसके अलावा खतरनाक पराबैंगनी किरणों से धरती को बचाने वाली ओज़ोन गैस की परत में छेद होने की आशंका भी एक बड़ी चिंता का विषय है। यह खतरा क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) की बढ़ती मात्रा से पैदा हुआ। सीएफसी उद्योग-धंधों से पैदा होने वाली गैस है। (स्रोत फीचर्स)

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए

संस्थागत 300 रुपए